

स्वतंत्र भारतीय आंदोलन में हिंदी कवियों का योगदान

डॉ. पूनम कुमारी

असिस्टेंट प्रोफेसर ऑफ हिंदी, गवर्नमेंट डिग्री कॉलेज, पटनचेरु, संगारेड्डी, तेलंगाना, भारत

Received: 18 February, 2023 | Accepted: 24 March, 2023 | Published: 26 March, 2023

वक्त कभी रुकता नहीं, वह लगातार, सतत और बिना किसी अवरोध के चलता रहता है और अपने पीछे कुछ यादें, कुछ पल खुशी के और गम के छोड़ जाता है। समय के गुजरते-गुजरते हमने पूरे 75 वर्ष व्यतीत कर लिए। आज हम आज़ादी का अमृत महोत्सव मना रहे हैं।

सन् 1757 ई. में हुए प्लासी युद्ध के बाद अंग्रेजों ने भारत पर पूरी तरह कब्ज़ा कर लिया था। सन् 1857 ई. का विद्रोह स्वतंत्रता संग्राम का पहला युद्ध माना जाता है, क्योंकि इसके पहले जितने भी युद्ध हुए, वे एक तरह से कबायली युद्ध थे। जिस राजा का राज्य छिन जाता, वह अपने राज्य को पाने के लिए आतुर रहता था और थोड़ी-बहुत सैनिक तैयारी करके युद्ध करने की कोशिश करता था। अंग्रेज भारत में आए तो थे व्यापार करने के लिए, किंतु यहाँ के तत्कालीन दुर्बल एवं विलासी शासकों और स्वार्थी राजदरबारियों के विश्वासघातों तथा जनसाधारण की उदासीनता के कारण वे यहाँ के शासक बन बैठे।

एक-एक शासक को क्रमशः अपदस्थ करते हुए सन् 1856 ई. में अवध के शासक वाजिद अली शाह को अपदस्थ कर वे पूरे भारत के शासक बन बैठे। सन् 1857 ई. के युद्ध में अजीमुल्लाह खाँ, बहादुर शाह ज़फ़र, तात्या टोपे, रानी लक्ष्मीबाई, मंगल पांडे जैसे देशभक्तों ने अपनी जान दी। सन् 1857 ई. के आंदोलन के बाद पूरे देश में क्रांति की आग धधकने लगी, जिसमें चंद्रशेखर आज़ाद, सरदार वल्लभभाई पटेल, भगत सिंह, बटुकेश्वर जैसे क्रांतिकारी नेताओं ने अपनी मातृभूमि को अंग्रेजों से छुटकारा दिलाने के प्रयास में अपनी शहादत हँसते-हँसते दे दी। उनकी यही शहादत देश को आज़ादी दिलाने में महत्वपूर्ण साबित हुई।

इस लड़ाई में जाति-पाँति और छुआछूत का कोई स्थान नहीं था और न ही उनमें किसी प्रकार का भेदभाव था। सभी धर्मों के लोगों ने, चाहे हिंदू हों या मुसलमान, एक झंडे के नीचे खड़े होकर मातृभूमि की रक्षा की। लेकिन यह दुर्भाग्य रहा कि आज़ादी मिलने से एक दिन पहले भारत माँ को दो भागों में बाँट दिया गया।

यह सही है कि अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ देश के वीर जवानों ने कमर कसी थी और आज़ादी लेकर ही दम लिया, लेकिन यह विचारणीय प्रश्न है कि क्या हम वास्तव में आज़ाद हैं? टॉल्स्टॉय के कथन के औचित्य को देखें तो हम अभी भी जानवर से मानव बनने की कोशिश में ही हैं। अभी भी हम अपने अंदर के अहं और स्वार्थपरता का नाश नहीं कर पाए हैं। इतिहास के पन्नों में एक नीरो और एक हिटलर परम क्रूर एवं निर्दयी के

रूप में अंकित हो गए, परंतु स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से आज तक हम Violence और Terrorism को अपने भाषा-कोश से निकाल नहीं पाए हैं। जीवन से मिटाने की बात कैसे सोच पाएंगे?

नोबेल पुरस्कार विजेता रवींद्रनाथ टैगोर ने 'गीतांजलि' में स्पष्टतः कहा है—

"Where the world has not been divided into little fragments by narrow domestic walls, into that heaven of freedom, my father lead my country awake!"

हाँ, एक तरफ़ गांधी जी जैसे नेताओं के भाषण से जहाँ देश में आज़ादी प्राप्त करने की ज़िद लोगों में आई, वहीं दूसरी तरफ़ सुभाषचंद्र बोस जैसे नेता विदेश में रहकर 'आज़ाद हिंद फ़ौज' का गठन कर आज़ादी के मार्ग को प्रशस्त कर पाए।

“सरफ़रोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है,

देखना है ज़ोर कितना बाज़ुएँ क्रांतिल में है।

वक्रत आने दे बता देंगे तुझे ऐ आसमाँ,

हम अभी से क्या बताएँ, क्या हमारे दिल में है।”

सन् 1857 ई. के स्वाधीनता संग्राम को इतनी क्रूरता से कुचला गया कि पूरा देश सहम गया। उनका आतंक देश भर में छा गया। इस आतंक की अनुगूँज हमें उस समय की हिंदी कविता में सुनाई देती है। भारतेंदु युग में इन पंक्तियों में वही गूँज रही है—

“कठिन सिपाही-द्रोह-अनल जा जन बल नासी,

जिन भय सिर न हिलाय सकल कहूँ भारतवासी।भारत”

आतंक, हताशा और उनमें उभरकर पुनः संघर्ष के लिए तत्परता की प्रवृत्ति भारतेंदु युग के प्रायः सभी प्रमुख कवियों, जैसे बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन', प्रतापनारायण मिश्र आदि की कविताओं में दृष्टिगत होती है।

पराधीनता की उस अवस्था में, जब स्वाधीनता की भावना जाग गई थी, कवियों को अपना गौरवपूर्ण अतीत प्रायः याद आता था। द्विवेदी युग की कविता के मूल स्वरों में एक स्वर अतीत-स्मरण का भी है, वर्तमान पर विचार का भी है और भविष्य की चिंता का भी। मैथिलीशरण गुप्त ने इसे सूत्र रूप में इस प्रकार प्रस्तुत किया है—

“हम कौन थे, क्या हो गए और क्या होंगे अभी,

आओ विचार बैठकर करते ये समस्याएँ सभी।”

उस समय जो स्वाधीनता आंदोलन चल रहा था, गुप्तजी की 'भारत-भारती' उसी से प्रेरित थी। इसलिए यह उस समय अत्यंत लोकप्रिय हुई। इस युग के अन्य कवियों में श्रीधर पाठक, हरिऔध, रामनरेश त्रिपाठी, रूपनारायण पांडे आदि ने भी राष्ट्रीयता की भावना से परिपूर्ण अनेक कविताएँ लिखी हैं। इन कवियों ने इस बात पर बराबर विचार किया है कि हमारा देश पराधीन क्यों हुआ। आपसी फूट, अशिक्षा, अंधविश्वास, स्वाभिमान का अभाव आदि अनेक बातें हैं, जो हमारे पतन और पराधीनता का कारण बनीं। स्वाधीनता, समृद्धि और सम्मान प्राप्त करने के लिए हमें इनसे मुक्त होना होगा। रूपनारायण पांडे कहते हैं—

“जैन, बौद्ध, पारसी, यहूदी, मुसलमान, सिख, ईसाई,

कोटि कंठ से मिलकर कह दो, हम सब भाई-भाई।”

आज जब स्वाधीन भारत में धर्म, जाति, क्षेत्र, भाषा, वर्ग आदि के बखेड़े बहुत प्रबल हो रहे हैं, तब ये उद्बोधन कितने प्रासंगिक और कितने सुखद लगते हैं।

अंग्रेजों के क्रूर दमन-चक्र की प्रक्रिया ने राजनीति को भी प्रभावित किया और साहित्य को भी। राजनीति में सत्याग्रह के विभिन्न चरण, स्वशासन की माँग, क्रांतिकारियों को कारावास तथा मृत्युदंड, किसान-मजदूरों की दशा सुधारने के लिए आंदोलन, नमक कानून तोड़ने के लिए दांडी मार्च, कुछ साम्यवादियों को काले पानी की सज़ा तथा कई अन्य घटनाएँ आशा-निराशा, उग्रता और विनम्रता की मनोवृत्तियाँ उत्तेजित करने का कारण बनीं।

इन्हीं घटनाओं के बीच छायावादी कविता का जन्म हुआ और उसका विकास हुआ। छायावादी कविता में राष्ट्रीयता की भावना की जिस प्रकार अभिव्यक्ति हुई है, उसके आयाम भी वही हैं, जिनका जन्म भारतेंदु युग में ही हो गया था। अर्थात् अतीत के गौरव का स्मरण, वर्तमान की दीन दशा और उज्ज्वल भविष्य के प्रति आशावादिता। प्रसाद कहते हैं—

“क्या सुना नहीं कुछ अभी पड़े सोते हो,
क्यों निज स्वतंत्रता की लज्जा खोते हो।”

कुछ कवि ऐसे हैं, जो बाकायदा स्वाधीनता आंदोलन में सक्रिय रूप से शामिल हुए और कारावास का दंड भोगा। उनमें माखनलाल चतुर्वेदी और सुभद्राकुमारी चौहान मुख्य हैं। जहाँ—

“खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी,
वहीं ‘पुष्प की अभिलाषा’ में आत्मबलिदान की भावना केंद्रित है—
मुझे तोड़ लेना वनमाली, उस पथ पर देना तुम फेंक,”
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने, जिस पथ जाएँ वीर अनेका।”

राष्ट्रकवि के रूप में दिनकर ख्यात हुए। उनके जीवन का यह विचित्र विरोधाभास है कि वे एक तरफ़ पराधीन भारत में सरकारी नौकरी करते थे और दूसरी ओर ऐसी कविताएँ लिखते थे, जो राष्ट्रीयता की भावना से भरपूर और क्रांति-चेतना से परिपूर्ण थीं। बालकृष्ण शर्मा ‘नवीन’ का ‘विप्लव-गान’ भी कम क्रांतिकारी नहीं है।

स्वाधीनता आंदोलन के दौरान जय-पराजय के जो भी दौर आए, हिंदी के तत्कालीन कवियों ने उन्हें कविताओं में शब्दबद्ध किया।

साहित्य अपने समय से प्रभावित होता है, लेकिन वह उसका दास नहीं होता। वह समय के साथ-साथ भी चलता है और आगे भी बढ़ता है। 15 अगस्त, 1947 ई. को हमारा देश स्वतंत्र हुआ। स्वतंत्रता-प्राप्ति सुख का अवसर था। कवियों ने इस उल्लास को अभिव्यक्त भी किया, लेकिन स्वतंत्रता के इस अवसर पर कुछ आशंकाएँ भी थीं, जिनकी अभिव्यक्ति आवश्यक थी। गिरिजाकुमार माथुर ने अपनी आशंका भी व्यक्त की और सावधान रहने पर बल दिया।

“आज जीत की रात, पहरए सावधान रहना,
खुले देश के द्वार, अचल दीपक समान रहना।”

स्वाधीनता प्राप्ति के अवसर पर कवि ने जिस नई जिंदगी को महसूस किया था, आज़ादी भारत में आई, लेकिन उस रूप में नहीं, जिस रूप में कवि ने उसकी कल्पना की थी। इसलिए स्वातंत्र्योत्तर काल में हिंदी के नए कवियों का मोहभंग हुआ और वे आत्मकेंद्रित हो गए।

अंत में बहुत से सवाल और बहुत से जवाब हैं। हमारे देश में ऐसे बहुत से लोग हैं, जिनके पास रोटी, कपड़ा और समाज से जुड़ी समस्याएँ हैं। यानी कि आज भी वे लाचारी के गुलाम हैं। इस गुलामी की जंजीर को तोड़ने के लिए हमें एक बार फिर आंदोलन करना होगा। वह आंदोलन किसी विदेशी शासक को अपनी धरती से हटाने के लिए नहीं, बल्कि समाज में रहने वाले उन लोगों को ऊपर उठाने के लिए करना होगा।

‘सुहासिनी सुमधुर भाषिणी’ ऐसी मातृभूमि में शस्य-श्यामला धरती की रक्षा व उन्नति के लिए अमंगल का नाश कर मधुमंगल की स्थापना करनी होगी। मानव और मानवता की महिमा बढ़े और पाप की पूजा बंद हो, ऐसे प्रयासों में तन-मन-धन से जुटना होगा। मातृभूमि से प्रेम कोई सीखने की चीज़ नहीं, बल्कि इसके योग्य बनना लोगों का परम कर्तव्य है। ये गीत—

“हम लाए हैं तूफ़ान से कश्ती निकाल के,
इस देश में रहता है मेरा देश...”

इसी मानवता को बचाते हुए, सँभालते हुए—अतीत पर हुए अत्याचारों को याद रखते हुए—मातृभूमि की मानवता को मत भूलिए।
पृथ्वी पर सँभल नहीं पाए, अंबर पर पाँव जमाते हो।

संदर्भ सूची

१. वंशी, बलदेव. समकालीन कविता : वैचारिक आयाम, पृ. 87।
२. वर्तमान साहित्य — कविता विशेषांक।
३. अज़ीमाबादी, बिस्मिल. सरफ़रोशी की तमन्ना।
४. गुप्त, मैथिलीशरण. भारत-भारती।
५. पांडे, रूपनारायण. स्वाधीनता और हिंदी कविता।
६. चतुर्वेदी, माखनलाल. पुष्प की अभिलाषा।